

## श्रीजनकपुर की यात्रा

भक्त के हृदय में जब विरह की ज्योति जागती है दिल का दीया जलने लगता है, तब अपने प्रियतम प्रभु का नाम, धाम, लीला और रूप यही चार उसके जीवन के आश्रय होते हैं । इन्हीं के सहारे विरही जीता है । वह इन्हीं का वर्णन करता है, श्रवण करता है, स्मरण करता है, गुनगुनाता है, डूबता और उतरता है । बाहर भी यही, भीतर भी यही । कोकिल स्वामी दिन-रात अपने प्रियतम प्रभु के स्मरण में संलग्न ही रहते । अब धाम-दर्शन की उत्कण्ठा जाग्रत हुई । आपने सबसे पहले जग-ज्जननी सतीगुरु स्वामिनी श्रीजनकनन्दिनी जन्मभूमि विदेह-पुरी की यात्रा की । श्रीस्वामी कोकिलजी के साथ केवल एक सेवक था । रात भर स्वामीजी अपने भाव में तन्मय रहे । कोई भी स्टेशन आता-“क्या यही श्रीजनकपुर है ?” ऐसा पूछते । कहीं भी श्री युगलसरकार का नाम दीखता तो प्रणाम करते । शरीर तो श्रीजनकपुर की ओर जा ही रहा था, चित्त-वृत्ति का प्रवाह भी उसी ओर हो रहा था ।